पाठ 6

बंदर और दर्पण

आइए सीखें – ● कहानी का हाव–भाव के साथ वाचन। ● कहानी के घटना – क्रम की समझ ● बुद्धि चातुर्य का महत्व, संयुक्ताक्षर, रेफ (र्) चिह्न की समझ, समानार्थी शब्द।

किसी जंगल में एक बंदर रहता था। वह बहुत ही चतुर था। एक दिन बंदर एक ऊँचे पर्वत पर चढ़ गया। पर्वत पर उसे एक थैला पड़ा मिला। थैले में एक दर्पण और कुछ मिर्चें रखी थी। बंदर ने सबसे पहले एक मिर्च को चखकर देखा। मिर्च बहुत चरपरी थी। उसने मिर्च को फेंक दिया। उसके बाद बंदर ने दर्पण को उलट–पुलट कर देखा। तभी दर्पण पर सूर्य की रोशनी पड़ी। सूर्य की रोशनी से उसकी आँखें झपक गईं। बंदर ने दर्पण को अपनी ओर किया।

शिक्षण संकेत– ● जंगली जानवरों के नाम पूछें। उन पर चर्चा करें । ● कहानी को हावभाव के साथ सुनाएँ, जैसे अकड़कर चलना, आँखें निकालकर कहने का भाव स्पष्ट करें।

उसे दर्पण में अपना चेहरा दिखाई दिया। उसने सोचा यह तो बड़े काम की चीज है। इसके सामने जो भी आता है वह इसमें दिखाई देता है। उसने थैला गले में लटकाया और उसमें दर्पण को सँभाल कर रख लिया।दर्पण मिलने के बाद बंदर अकड़ता हुआ जंगल में गया। मार्ग में उसे एक पेड़ पर मुर्गा बैठा मिला। मुर्गे ने पूछा–"बंदर भाई कहाँ चले"? बंदर ने अपनी अकड़ में मुर्गे की बात अनसुनी कर दी।

आगे चलकर बंदर को एक भालू मिला भालू ने बंदर को अकड़–अकड़ कर चलते देखा तो पूछा –"क्या बात है ? आज

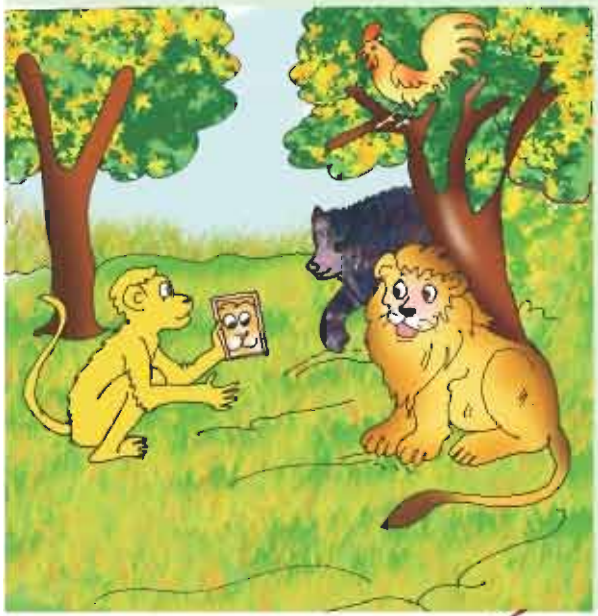

इतने अकड़कर क्यों चल रहे हो ?" भालू की बात सुनकर बंदर ने बिना डरे जवाब दिया–"जाओ अपने रास्ते, तुम्हें इस से क्या?" भालू ने आँखें निकालकर कहा–"लगता है, तुम मुझे

नहीं जानते ?" बंदर बोला – "अरे ! तुम जैसों को तो मैं थैले में बंद रखता हूँ। चलो भागो यहाँ से।" भालू और बंदर का झगड़ा सुनकर वहाँ एक शेर आ गया । शेर ने उनसे झगड़ने का कारण पूछा। भालू ने बताया कि यह बंदर बहुत अकड़ रहा है। कहता है कि मेरे जैसों को तो यह थैले में रखता है।

भालू की बात सुनकर शेर को भी गुस्सा आ गया। वह बंदर को डाँटने लगा। बंदर बोला– "मैं ठीक कह रहा हूँ। भालू ही नहीं तुम जैसे शेर भी मेरे थैले में बंद हैं। जान प्यारी है तो यहाँ से भाग जाओ।" शेर ने कहा– "अगर यह बात है तो जरा थैले में से शेर निकाल कर दिखाओ?" बंदर ने दर्पण निकालकर उसके सामने कर दिया।दर्पण में अपना चेहरा देखकर शेर को बंदर की बात पर विश्वास हो गया। शेर ने कहा–"अरे भाई तुम तो बड़े बहादुर हो। हम लोग अभी यहाँ से चले जाते हैं।"

शेर और भालू दोनों डरकर वहाँ से भाग गए। चतुर बंदर शान से जंगल में रहने लगा। अब उसे किसी का डर नहीं था।

शब्दार्थ

चतुर	–	होशियार	रोशनी	–	प्रकाश, उजाला
विश्वास	–	भरोसा	दर्पण	–	आइना
अकड़	–	ऐंठ			

अभ्यास

1. बताइए –

- बंदर को पर्वत पर क्या मिला ?
- बंदर ने भालू से क्या कहा ?
- बंदर ने शेर और भालू को कैसे भगाया ?

2. लिखिए –

- बंदर को दर्पण कहाँ से मिला था ?

.....

- बंदर ने दर्पण में चेहरा देखकर क्या सोचा ?

.....

- बंदर को मार्ग में कौन–कौन मिला क्रम से लिखिए।

.....

3.(अ)

वाक्य	किसने कहा	किससे कहा
बंदर भाई कहाँ चले ?		
तुम जैसों को तो मैं थैले में रखता हूँ।		
यह बंदर बहुत अकड़ रहा है।		
तुम तो बड़े बहादुर हो।		

(ब) कहानी के घटना क्रम को सही करके लिखिए –

- थैले में एक दर्पण और कुछ मिर्च थी।
- पर्वत पर उसे एक थैला मिला।
- किसी जंगल मे एक बंदर रहता था।
- मार्ग में पेड़ पर बैठा मुर्गा मिला।
- दर्पण मिलने के बाद बंदर अकड़ता हुआ जंगल में गया।

- .....
- .....
- .....
- .....
- .....

4. (अ) पढ़िए, समझिए और लिखिए –

1. शेर जंगल में रहता था। शेर वन में रहता था।	..... जंगल	..... वन
2. यह रास्ता सुन्दर है। यह मार्ग सुन्दर है।	.....	.....
3. बंदर को आईना मिला। बंदर को दर्पण मिला।	.....	.....
4. पहाड़ बर्फ से ढका है। पर्वत बर्फ से ढका है।	.....	.....

ब. जोड़ी बनाकर लिखिए –

शेर	–	मुर्गी	शेर	शेरनी
मुर्गा	–	शेरनी	.....	.....
बंदर	–	हथिनी	.....	.....
बकरी	–	बंदरिया	.....	.....
हाथी	–	बकरा	.....	.....

पढ़िए और समझिए –

प + र् + व + त

(प + र् + व + त)

पर्वत

मु + र + गा

(मु + र् + गा)

मुर्गा

5. (अ) दिए गए शब्दों के वर्ण अलग करके लिखिए –

दर्पण – द + र् + प + ण

शर्बत – .....

नर्मदा – .....

(ब) दिए गए वर्णों को मिलाकर शब्द बनाइए –

मि + र् + च .....

मा + र् + ग .....

मु + र् + गा .....

(स) शब्द पूरा कीजिए –

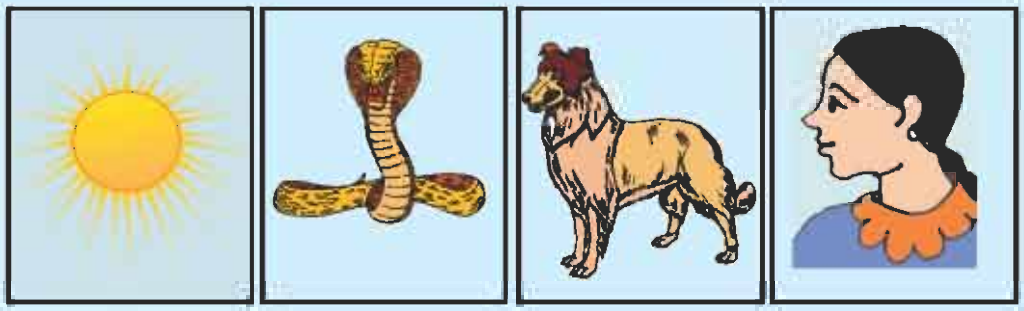

सरज सप कुता गदन

6. बोलिए और समझिए –

परवत – पर्वत	शरबत – शर्बत
मिरच – मिर्च	गरम – गर्म
बरतन – बर्तन	नरमदा – नर्मदा

अब करने की बारी –

7. कहानी में आए जानवरों के मुखौटे शिक्षक की मदद से बनाइए।

8. मुखौटे पहन कर कहानी का अभिनय करिए।

9. चित्र देखकर पाँच वाक्य लिखिए –

.....

.....

.....

.....

.....

श्रुतलेख

शिक्षण संकेत:- शिक्षक बच्चों को दो से तीन पंक्तियों का सरल श्रुतलेख कराने का अभ्यास कराएँ।